सत्यमेव जयते

रोज़गार समाचार

www.rojgarsamachar.gov.in
www.employmentnews.gov.in

साप्ताहिक

अंग्रेजी एवं उर्दू में भी प्रकाशित
(वार्षिक शुल्क : ₹ 350)

खण्ड 37 अंक 32 पृष्ठ 64 | नई दिल्ली 10-16 नवंबर 2012 | ₹ 8.00

रोज़गार सारांश

भा.ति.सी.पु.ब.

● भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल द्वारा 516 सहायक उप निरीक्षक (आशुलिपिक), हेड कॉन्स्टेबल (योधी लिपिक-वर्गीय) तथा हेड कॉन्स्टेबल (शिक्षा एवं स्ट्रेस सलाहकार) की भर्ती के लिए आवेदनपत्र आमंत्रित.
अंतिम तारीख : 14.12.2012

आई.ए. एवं ए.डी.

● भारतीय लेखा-परीक्षा एवं लेखा विभाग, इलाहाबाद (उ.प्र.) को 204 एम.टी.एस. (मल्टी टास्किंग स्टाफ) की आवश्यकता ऑनलाइन पंजीकरण की अंतिम तारीख : प्रकाशन के 20 दिन बाद.

ओ.एन.जी.सी.

● ओ.एन.जी.सी. द्वारा ई-4/ई-2 स्तर पर 85 स्पेशलिस्ट/ विशेषज्ञ की भर्ती के लिए आवेदनपत्र आमंत्रित
अंतिम तारीख: 03-12-2012

सं.लो.से.आ.

● संघ लोक सेवा आयोग द्वारा विभिन्न रिक्त पदों के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित
अंतिम तारीख: 29.11.2012

● संघ लोक सेवा आयोग द्वारा सम्मिलित रक्षा सेवा परीक्षा (I) 2013 की अधिसूचना जारी
अंतिम तारीख: 10.12.2012

क.च.आ.

● कर्मचारी चयन आयोग द्वारा विभिन्न राज्यों एवं संघ शासित प्रदेशों में मल्टी टास्किंग (गैर-तकनीकी) स्टाफ के पद पर भर्ती 2013 की अधिसूचना जारी.
अंतिम तारीख: 7.12.2012

बैंकों, सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों, सशस्त्र सेनाओं रेलवे और अन्य सरकारी विभागों की अन्य रिक्तियों के लिए अंदर के पृष्ठ देखें.

ललित कला में कॅरिअर

—प्रोफेसर सौमेन्द्र नाथ लाहिरी

कला मनुष्य की अनुभूति की परिष्कृत अभिव्यक्ति होती है. ''जीवन के साधन के रूप में कला अभिज्ञता को बढ़ाती है.'' शिक्षा में कला की भूमिका पर तत्काल ध्यान दिया जाना चाहिए. कला द्वारा दी जाने वाली अंतर्दृष्टि मानव को तादात्म्य स्थापित करने में सहायता करती है और सौंदर्य तथा नैतिक महत्व के संबंध में कार्य करती है. कला में शिक्षा प्रत्येक मनुष्य के विकास का एक अनिवार्य अंग होती है. प्लेटो से लेकर, उन सभी व्यक्तियों ने, जिन्होंने जीवन भर ज्ञान प्रक्रिया का अध्ययन किया है, शिक्षा-प्रक्रिया में कला के महत्व पर बल दिया है. आज प्रौद्योगिकी ने महत्वपूर्ण प्रगति की है और एक गतिशील समाज का पथ-प्रदर्शन किया है. कला हमें मानव, एक अति सम्पूर्ण व्यक्ति बनाती है.

ललित कला में वे कला-रूप होते हैं जो व्यावहारिक अनुप्रयोग की अपेक्षा मुख्य रूप से सौंदर्यशास्त्र (कला शास्त्र) के लिए विकसित किए गए हैं और अपने सौंदर्य तथा सार्थकता के लिए आंके जाते हैं. पहले अधिकांश छात्र इंजीनियरी अथवा चिकित्सा व्यवसाय के क्षेत्र में जाना पंसद करते थे, किंतु आज-कल ललित कला एक उभरते हुए व्यवसाय के रूप में ध्यान आकर्षित कर रही है. जब तक सभी छात्र अपनी विशेषज्ञता का क्षेत्र नहीं चुन लेते, तब तक यह सभी छात्रों के लिए अध्ययन के एक मुख्य क्षेत्र के रूप में प्रमाणित होता है. यह रचनात्मक अभिव्यक्ति में वृद्धि करते हुए, हमारा समाज जो भी मानदंड स्वीकार करेगा, उन सभी पर खरा उतरने के लिए निरंतर परिवर्तित एवं रूपांतरित होती रहती है. ललित कला सतत एवं संज्ञानात्मक कौशल बढ़ाती है, ललित कला में एक प्रभावी शिक्षा छात्रों को, जो वे देखते हैं, जो वे सुनते हैं, उन्हें समझने तथा जो वे स्पर्श करते हैं उसकी अनुभूति करने में सहायता करती है, ललित कला छात्रों के मस्तिष्क या ज्ञान को पुस्तकों अथवा साध्य के नियमों की सीमाओं से आगे ले जाने में उनकी सहायता करती है. ललित कला बाल-विकास में योगदान करती है और अभिव्यक्ति के कौशल रचनात्मकता एवं संज्ञान को प्रोत्साहित करती है. कला के अध्ययन से छात्र अपनी निजी संस्कृति का व्यापक ज्ञान प्राप्त करते हैं. यह छात्रों को कलात्मक परिप्रेक्ष्य में विश्व की रूपरेखा बनाने में सक्षम बनाती है और उन्हें यह देखने के लिए सहमत कराती है कि ऐसे कई रूप हैं जिनमें विश्व को देखा जा सकता है. ललित कला, कला को एक व्यापक परिष्कृत बल के रूप में देखती है. ललित कला शिक्षा का लक्ष्य सभी छात्रों को, प्रकृति तथा कला के महत्व की जानकारी देना है. व्यावहारिक तथा सैद्धांतिक ज्ञान के माध्यम से छात्रों को, परिष्कृत व्यक्ति के लिए ललित कला के महत्व से परिचित कराया जाता है.

भारत में ललित कला पाठ्यक्रम करने के लिए अपेक्षित योग्यताएं :

ललित कला में स्नातक डिग्री (बीएफए) में प्रवेश के लिए 10+2 या हायर सेकेंडरी परीक्षा पूरी करना और एक अभिरुचि परीक्षा उत्तीर्ण करना उपेक्षित होता है. यह परीक्षा सभी कला संस्थाओं द्वारा संचालित की जाती है. ललित कला में व्यावसायिक शिक्षा इस चार वर्षीय डिग्री कार्यक्रम के माध्यम से की जा सकती है. यह कार्यक्रम दो पाठ्यक्रमों अर्थात फाउंडेशन पाठ्यक्रम (एक वर्ष) एवं विशेषज्ञता पाठ्यक्रम (तीन वर्ष) में विभाजित होता है. इसके अतिरिक्त व्यावसायिक अध्ययन ललित कला में मास्टर (एमएफए) के माध्यम से किया जा सकता है, जो सामान्यतः दो वर्षों का कार्यक्रम होता है. इस पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के इच्छुक उम्मीदवार के पास संबंधित विशेषज्ञता में ललित कला स्नातक की डिग्री होनी चाहिए.

ललित कला मुख्य रूप से पेंटिंग, मूर्ति कला, अनुप्रयुक्त कला, दृश्य संचार, प्रिंट मेकिंग एवं कला इतिहास पर केन्द्रित होती है.

कला इतिहास: अवलोकन की व्यापक समझ, विपणन कौशल दृढ़ता रखने वाले सृजनशील छात्र ललित कला के क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं. ललित कला विधा में पाठ्यक्रम करने से व्यक्ति में सृजनशीलता आती है और अत्यधिक प्रतिस्पर्धी व्यावसायिक कला उद्योग में टिके रहने में अन्यों की अपेक्षा सहायक होता है. ललित कला में कॅरिअर बनाने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए ललित कला में कॅरिअर के अनेक अवसर हैं.

अनुप्रयुक्त कला: यह व्यावसायिकता के रूप में भी प्रसिद्ध है, इसमें विज्ञापन तथा प्रचार के नियोजन एवं निष्पादन में लगे प्रशिक्षण-छात्र शामिल होते हैं. विज्ञापनों, प्रेस/पत्रिका विज्ञापनों, पोस्टरों के लिए आकर्षक चित्र डिजाइन, प्रतीकों तथा लोगों के डिजाइन, टाइपोग्राफी, पैकेजिंग डिजाइन, डिस्प्ले डिजाइन, बुक जैकेट्स आदि तैयार करने के लिए यह व्यावसायिक उद्देश्यों की कला मीडिया है. इसमें औद्योगिक एवं शैक्षिक अनुप्रयोग के दृश्य साधन भी शामिल होते हैं. आज-कल इस विधा के स्नातक विज्ञापन एजेंसियों, प्रकाशन-गृहों, मल्टीमीडिया, कार्पोरेट संस्थाओं में विजुऊलाइजर/ग्राफिक डिजाइन, फ्रीलांस आर्टिस्ट, एनीमेटर तथा इलस्ट्रेटर, वेब डिजाइनर, सेट डिजाइनर, इंटीरियर डेकोरेटर, अध्यापक या कला कार्यक्रमों में प्रशासक भी बन सकते हैं. इंटीरियर डिजाइन, सजावटी कला, विज्ञापन, ग्राफिक डिजाइन, फिल्म फोटोग्राफी, औद्योगिक डिजाइन, फैशन एवं वास्तुकला से संबंधित कॅरिअर के विकल्प भी स्नातक अध्ययन के बाद मिलते हैं. ग्राफिक डिजाइनर के रूप में आवश्यकता अधिकांशतः बिलिबोर्ड्स विंडो स्लाइड्स, तकनीकी केटलॉग तथा सिनेमा स्लाइड्स की डिजाइन तैयार करने एवं बनाने के लिए होती है. फिल्म थियेटर प्रस्तुति में भी रोज़गार प्राप्त किया जा सकता है.

पेंटिंग: यह दृश्य अभिव्यक्ति का एक रूप है और दृश्य कला के मुख्य रूपों में से एक है. सृजनात्मक पेंटिंग के एक पाठ्यक्रम कार्य के रूप में छात्र एक कार्य-निकाय के लिए संकल्पना का विकास करते हैं. इसमें पृथक्करण, माध्यमों के मिश्रण, रूढ़ अंकन, पेंटिंग के लिए एक आधार के रूप में यथार्थता का उपयोग करने, म्युनिक रूपों को प्रयोग में लाने, मिथ्याकरण एवं सरलीकरण को प्रोत्साहन दिया जाता है. इसमें कोई कलाकार पोर्ट्रेट, भू-दृश्यों, कंपोजीशन, जड़ पदार्थों, अर्मूत पेंटिंग, भित्ति चित्रों आदि को विभिन्न माध्यमों पर पेंट करता है. एक कॅरिअर के रूप में कलाकार प्रदर्शनियों के माध्यम से अथवा कला-दीर्घाओं में विभिन्न कला-प्रदर्शनियों में भाग लेकर अपनी कला-कृतियों को बढ़ावा देता है. वे स्कूलों तथा कॉलेजों में कला अध्यापक के रूप में तथा फ्रीलांस कलाकार के रूप में भी अध्यापन कार्य चुनते हैं.

मूर्ति कला : यह एक व्यापक पोर्टफोलियो निर्माण पाठ्यक्रम है जो विविध मीडिया में प्रभावशाली मूर्तिकला कार्य के माध्यम से अभिव्यक्ति के अवसरों का पता लगाता है. यह एक तीन-आयामी कलाकृति है जो चिकनी मिट्टी, प्लास्टर ऑफ पेरिस हार्ड अथवा प्लास्टिक सामग्री सामान्यतः पत्थर (चट्टानी या संगमरमर), धातु (कांस्य) तथा लकड़ी (काष्ठ) को आकृति देकर बनाई जाती है. कुछ आधुनिक मूर्तियां सीधे नक्काशी करके बनाई जाती हैं, जबकि अन्य मूर्तियां जोड़ कर, निर्माण करके, आग में पकाकर, वेल्ड करके, मोल्ड द्वारा या कास्ट करके बनाई जाती हैं. चूंकि मूर्तियों में ऐसी सामग्रियां उपयोग में लाई जाती हैं जिन्हें मोड़ा जा सकता है या घटाया-बढ़ाया जा सकता है, इसलिए इसे एक प्लास्टिक कला भी माना जाता है. रचनात्मक मूर्ति बनाने में रचना अथवा कल्पना संबंधित विषय पर आधारित होती है, आजकल कलाकार मूर्ति कला में स्थापना का एक आधुनिक संकल्पना के रूप में सर्जन कर रहे हैं. मूर्ति कलाकार अपना कॅरिअर प्रदर्शनियों, कला मेलों में अपनी कलाकृतियां प्रदर्शित करके, आंतरिक/ बाहरी परियोजनाओं के लिए कमीशन आधारित कलाकृतियों का निर्माण करके और स्कूलों तथा कला संस्थाओं में अध्ययन द्वारा आगे बढ़ाते हैं.

दृश्य संचार: ऐसे विश्व में जहां पर्यावरण, सामाजिक, राजनीतिक गतिविधि का कोई भी क्षेत्र संचार के क्षेत्र से अधिक चुनौतीपूर्ण नहीं है. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य, व्यावसायिक उदाहरणों, उपयुक्त दृश्य मीडिया मुक्त हस्त ड्राइंग एवं कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी जानकारी के माध्यम से ज्ञान एवं तकनीकी कौशल बढ़ा कर संकल्पनात्मक संचार के उद्देश्य के लिए परिष्कृत सृजनशील विचारों तथा कल्पनाओं को तीव्रता से साकार करने की क्षमता को बढ़ा कर उद्योग की आवश्यकताओं की समझ उत्पन्न करना है. इस कार्यक्रम में संकल्पनाओं, स्क्रिप्टिंग, दृश्यांकन, स्टोरी बोर्ड तथा गति और 2-डी एवं 3-डी एनीमेशन तकनीकों के अर्थ को ध्यान में रखते हुए रचनात्मक मूर्ति निर्माण करना शामिल है. दृश्य संचार में कॅरिअर के विकल्प मुख्य रूप से विज्ञापन एजेंसियों, मल्टीमीडिया उद्योग, फिल्म-निर्माण में और एनीमेटर तथा फ्रीलांस कलाकार के रूप में विद्यमान है.

प्रिंट मेकिंग : इस कार्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न माध्यमों और प्रौद्योगिकी के माध्यम से अभिव्यक्ति के लिए छात्रों के कौशल का विकास करना और छात्रों के व्यक्तित्व को अनुकूल बनाना है, जिसमें ज्ञात व्यावहारिक अपेक्षाओं के साथ रचनात्मक स्वतंत्रता विद्यमान हो, इसमें विभिन्न माध्यमों जैसे रिलीफ प्रोसेस, इंटेग्लियों, लिथोग्राफी, स्क्रीन प्रिंटिंग एवं मिक्स मीडिया में रचना तथा व्यक्तिगत तकनीकों पर बल दिया जाता है. प्रिंट मेकिंग के छात्र अपना कॅरिअर, विभिन्न कला-प्रदर्शनियों तथा कला दीर्घाओं के संग्रह में अपने प्रिंट प्रदर्शित करके फ्रीलांस कलाकार के रूप में कार्य करके अपने कॅरिअर विकल्प तलाश सकते हैं. अध्ययन भी प्रिंट मेकिंग में एक प्रभावशाली कॅरिअर विकल्प है.

(शेष पृष्ठ 64 पर)

एसएमएस रोज़गार अलर्ट

एम्प्लॉयमेंट न्यूज़/रोज़गार समाचार की पहुंच बढ़ाने के लिए, ग्राहकों के लिए ई-संस्करण की शुरुआत की गई है. आगे और भी ज्यादा पहुंच बढ़ाने के लिए एवं नौकरी से संबंधित मुख्य सूचनाओं को जल्दी से मुहैया करवाने के लिए रोज़गार समाचार की ओर से **'एसएमएस रोज़गार अलर्ट'** सुविधा की शुरुआत हो गई है.

रोज़गार समाचार ने पहले से ही वेबसाइट पर नोटिस के द्वारा मोबाइल नम्बरों का एक वृहत्त डाटाबेस तैयार कर लिया है. नियमित ग्राहकों को प्राथमिकता दी जायेगी.

इस सुविधा को प्राप्त करने के लिए:

(i) रोज़गार समाचार की वेबसाइट पर जाएं: **www.employmentnews.gov.in/ www.rojgarsamachar.gov.in**

(ii) एसएमएस रोज़गार अलर्ट पर क्लिक करें

(iii) पंजीकरण करें अपना

1. नाम ---------- 2. फ़ोन नं. ----------
3. पता ---------- 4. ई-मेल आई डी ----------

5. रोज़गार अलर्ट का विकल्प (कोई दो चुनें)

(क) सरकारी/सिविल सेवाएं (ख) बैंकिंग/वित्त
(ग) रक्षा/अर्द्ध सैनिक बल (घ) अभियांत्रिकी

ललित कला में ....

(पृष्ठ 1 का शेष)

कला इतिहास : यह पाठ्यक्रम सभ्यता के प्रारंभिक काल से लेकर वर्तमान समय तक भी भारतीय एवं पाश्चात्य कला का क्रमिक सर्वेक्षण कराता है, जिसमें कला के नित्य परिवर्तनशील जगत में अति आधुनिक प्रवृत्तियां एवं कल्पना भी शामिल हैं. यह, संदर्भ तथा दृश्य विश्लेषण-दोनों के माध्यम से राजनीति, धर्म, संरक्षण, लिंग, कार्य एवं नैतिकता जैसे विषयों की जांच करके उनके ऐतिहासिक संदर्भ में कला-कृतियों समझ को आसान बनाता है. कॅरिअर के रूप में यह आर्ट क्यूरेटर, कला दीर्घाओं के लिए आंतरिक कला समालोचक, अनुसंधान तथा प्रलेखन में, संग्रहालयों, कला दीर्घाओं एवं नीलामियों में और इंटरनेट पर कला-कृतियों की जांच तथा मूल्यांकन करने का कौशल बढ़ाने एवं कला इतिहास अध्यापन द्वारा कला शब्दावली में दक्ष होने और दृश्य-भाषा किस तरह भावाभिव्यक्ति करती है, का ज्ञान प्राप्त करने के अवसर देता है. इस क्षेत्र में कोई भी व्यक्ति स्वतंत्र कला इतिहासकार के रूप में भी अपना कॅरिअर बना सकता है.

इन अध्यापन कार्यक्रमों का उद्देश्य, छात्रों के ज्ञान का सम्पूर्ण परिष्करण करना है, जो केवल व्यवसाय कौशल बढ़ाने तक सीमित नहीं होते, बल्कि समेकित सर्जनशीलता एवं विचार के एक स्तर पर पहुंचने के लिए उपयुक्त विचार शक्ति उत्पन्न करते हैं और भावों का संवर्धन भी करते हैं.

इन अध्ययन में प्रवेश लेने के लिए एक नैसर्गिक अभिरुचि तथा प्रतिभा होना निःसंदेह महत्वपूर्ण है, किंतु किसी प्रख्यात कला संस्था में विशेषज्ञ के मार्ग-दर्शन में लिया गया औपचारिक प्रशिक्षण कला-कौशल को बढ़ाने तथा निखारने में सहायक होता है. **''साधारण शिक्षा साधारण कॅरिअर देती है असाधारण शिक्षाधारी कला-निस्तारक बनता है.''**

भारत के उच्च 5 ललित कला महाविद्यालय:

- कला महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध), नई दिल्ली.
- ललित कला संकाय, एमएस विश्वविद्यालय, बड़ोदरा, गुजरात
- दृश्य कला संकाय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी.
- सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई
- कला भवन, शांति निकेतन, विश्वभारती विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल.

इन महाविद्यालयों के अतिरिक्त, भारत के कुछ अन्य प्रतिष्ठित महाविद्यालय निम्नलिखित हैं:-

- ललित कला एवं कला शिक्षा विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली.
- राजकीय कला महाविद्यालय, चंडीगढ़
- कला एवं शिल्प महाविद्यालय, ललित कला संकाय, लखनऊ, उ.प्र.
- राजकीय कला महाविद्यालय, पणजी, गोवा.
- कला एवं संस्कृति विभाग, राजकीय कला महाविद्यालय, चेन्नै.
- जवाहरलाल नेहरू वास्तुकला एवं ललित कला विश्वविद्यालय, हैदराबाद.

इन महाविद्यालयों के अतिरिक्त कुछ ऐसे सुप्रसिद्ध पॉलिटेक्निक महाविद्यालय भी हैं, जो ललित कला में 3 वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाते हैं. मूक-बधिर छात्रों को ललित कला में शिक्षा देने और उनका कला-कौशल बढ़ाने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय ने कला महाविद्यालय, नई दिल्ली में 1980 से ललित कला में एक डिप्लोमा पाठ्यक्रम चला रखा है.

इस पाठ्यक्रम में छात्रों को बी.एफ.ए. पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित व्यावहारिक विषय पढ़ने होते हैं, किंतु सैद्धांतिक विषय पढ़ने से उन्हें मुक्त रखा गया है.

इस प्रकार ललित कला एक ऐसा विषय सिद्ध हुआ है जो दृश्य कला जिसने हमारे देश में अपने उच्च मानक स्थापित किए हैं, के क्षेत्र में सकारात्मक अवसरों की तलाश करने के लिए युवा पीढ़ी में निःसंदेह सच्चे संदर्भों में विचारों का सृजन करेगा और उन्हें प्रोत्साहन देगा. भारतीय कला क्षेत्र में तीव्र गति से विकसित हो रही प्रौद्योगिकी तथा इस क्षेत्र में उभर रही नई दिशाओं के साथ ही, दृश्य कला ने भारतीय समाज पर एक व्यापक प्रभाव छोड़ा है, जो दृश्य कला एवं कॅरिअर अवसरों के नए तथा उभर रहे क्षेत्रों में उदीयमान छात्रों को उपयुक्त मार्गदर्शन करने में एक प्रकाश स्तंभ सिद्ध हुई है. अंत में "कोई भी व्यक्ति न तो पीछे ही जा सकता है और न ही नई शुरुआत कर सकता है, किंतु आज कार्य प्रारंभ करके एक नया परिणाम दे सकता है." -*मारिया रॉबिनसन्*

(लेखक कला महाविद्यालय, नई दिल्ली में विभागाध्यक्ष (एप्लाइड आर्ट) हैं. ई.मेल- lahiri. soumen@yahoo.com)